# फासीवाद का उदय: यूरोप में अधिनायकवाद की वैचारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि (1919–1939)
# Rise of Fascism: Ideological and Social Background of Authoritarianism in Europe (1919–1939)

प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात यूरोप की राजनीतिक और सामाजिक संरचना गहरे संकट से गुजर रही थी। आर्थिक अस्थिरता, राष्ट्रीय अपमान, बेरोजगारी तथा लोकतांत्रिक संस्थाओं की कमजोरी ने अधिनायकवादी विचारधाराओं के उदय के लिए अनुकूल परिस्थितियाँ उत्पन्न कीं। इसी संदर्भ में इटली में फासीवाद और जर्मनी में नाज़ीवाद का उदय हुआ, जिसने अंतरयुद्ध काल की राजनीति को निर्णायक रूप से प्रभावित किया।
इटली में बेनिटो मुसोलिनी ने 1922 में फासीवादी शासन की स्थापना की, जिसने राष्ट्रवाद, सैन्यवाद और एकदलीय तानाशाही को बढ़ावा दिया। वहीं जर्मनी में वर्साय की संधि से उत्पन्न अपमान, आर्थिक संकट और वाइमर गणराज्य की अस्थिरता ने एडॉल्फ हिटलर के नेतृत्व में नाज़ीवाद को उभरने का अवसर दिया। नाज़ी विचारधारा ने नस्लवाद, आर्य श्रेष्ठता और विस्तारवाद को राजनीतिक कार्यक्रम के रूप में प्रस्तुत किया।
इतिहासकार एरिक हॉब्सबॉम ने फासीवाद को पूँजीवादी संकट की प्रतिक्रिया माना है, जबकि हन्ना एरेंट ने इसे सर्वसत्तावादी राजनीति (Totalitarianism) की व्यापक प्रक्रिया का हिस्सा बताया। सामाजिक दृष्टि से फासीवाद मध्यम वर्ग की असुरक्षा और श्रमिक आंदोलनों के भय से भी जुड़ा था।
इस प्रकार फासीवाद केवल एक राजनीतिक विचारधारा नहीं था, बल्कि आर्थिक संकट, राष्ट्रवादी उग्रता और लोकतांत्रिक विफलता का संयुक्त परिणाम था, जिसने अंततः द्वितीय विश्व युद्ध की पृष्ठभूमि तैयार की।